B.Ed-ll **Nakul Sah**

Biological Science **Assistant Professor**

Course- 7(b)

Lecture – 12

Principles of Currilculum Construction .
पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धान्त

शिक्षण से पूर्व विषय की पाठ्यचर्या का निर्माण आवश्यक है तभी तो शिक्षण उचित ढंग से हो पायेगा । पाठ्यचर्चा विभिन्न सिद्धान्तो ं पर बनाई जाती है। जो कि निम्न लिखित है :–

1.छात्र केन्द्रित सिद्वान्त

2. शिक्षा के उद्देश्यों को पूर्ण करने का सिद्धान्त

3. **पाठ्य**चर्चा सहगामी क्रियाओं का सि़द्धान्त

4.व्यक्तिगत विभिन्नताओं का सिद्धान्त

5.जीवन से सम्बन्ध रखने का सिद्धान्त

6.विषयों के पारस्परिक सम्बन्ध का सिद्धात

7.संस्कृति के ज्ञान का सिद्धान्त

8. **अग्रदर्शिता** का सिद्धान्त

9.क्रियाशीलता के प्रेरित करने का सिन्द्वात

1. छात्र केन्द्रित या बाल केन्द्रित सिद्धान्त **(Principel of Students Centredunes)** :–

आज विज्ञान का युग है इस युग में शिक्षा में सबसे बड़ा क्रान्तिकारी परिवर्तन यह हुआ कि शिक्षा विषय केन्द्रित न होकर छात्र केन्द्रित हो गई। इसमें। छात्रों की आवश्यकताओ, रूचियो, अभिप्राय तथा संवेगों को आधार बनाया जाता है इस क्षेत्र मे **जान डी.वी** का नाम शिखर पर है। उन्होनें प्रयोगशाला स्कूल खोलकर इस दिशा में प्रयास किये है। छात्रों को उददेश्य पूर्ण सीखने (Purposeful learning) के अवसर प्रदान करती है। बच्चों को उनकी रूचि के अनुसार विषय एवं क्रियाएं करने का अवसर दिया जाता है।

2. शिक्षा के उद्देश्यों को पूर्ण करने का सिद्धान्त **(Principles of compelete with the aims of education)** :–

वर्तमान समय मे ं शिक्षा का उद्देश्य बालकों का शरीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, चारित्रिक व नैतिक विकास करन के साथन्साथ उन्हे किसी उद्योग या उत्पादन कार्य में निपुण करना है। विज्ञान के पाठ्यचर्चा में सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ–साथ व्यायाम को शामिल किया जााना चाहिए वैसे विषय वस्तु के प्रयोग तो होते ही है। इसमे ं स्वास्थ्यप्रद नियम जैसे सुबह जल्दी सो कर जगना, नित्य स्नान करना, शरीर व उसके विभिन्न अंगो नाक, कान, ऑख, गला दॉत सभी की सफाई करना व्यायाम करना, पौष्टिक आहार लेना आदि को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए जिससे विज्ञान विषय के अन्तर्गत प्रायोगिक शिक्षा के साथ स्वास्थ्य लाभ भी हो सके ।

3. पाठ्यचर्या – सहगामी क्रियाओं का सिद्धान्त **(Principle of Co-Curricular Achivities)** :–

बालकों के सर्वागीण विकास के लिए पाठ्यचार्य सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था होना चाहिए।

जीवन के प्रत्यक्ष अनुभवो ं तक ं लिए छात्रो ं की आयु रूचि, झ ुकाव और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्यचर्या सहगामी क्रियाओं की योजना तैयार की जानी चाहिए। इसके लिए प्रयोगशाला ही एक ऐसा स्थान है जहाँ विद्यार्थी व शिक्षक एक साथ कार्य करते है। इसके ,ज़रा बालकों के व्यक्तित्व का विकास होता है। माध्यामिक शिक्षा आयोग ने भी बताया कि प्रयोगशाला रंगमंच आदि से विघार्थियों और शिक्षकों के मध्य (Inter action) भी अच्छे से हो जाता है।

4. व्यक्तिगत विभिन्नताओं का सिद्धान्त **(Principle of Individual difference)** :–

पाठ्यचर्या का निर्माण बालको ं का व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। यदि पाठ्यचया बालकों की रूचियां आवश्यकतओं व क्षमताओं को ध्यान में रखकर तैयार की गई है तो वह उनके विकास में सहायक होगी। पाठ्यचर्या लचीली होना चाहिए जिससे समयानुसार उसमें परिवर्तन किया जा सके ं। अत परिस्थिति, स्थान व समयानुसार पाठ्यचर्या में परिवर्तन दिया जाना चाहिए जैसे शहरी क्षेत्र मे ं रहने वाले विद्यार्थियो ं की आवश्कताएं व समस्याऐं ग्रामीण क्षेत्र में विद्यार्थियों से भिन्न होती है।

5. जीवन से सम्बंध रखने का सिद्धान्त **(Related to life)** :–

हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली ऐसी है जिससे हम बालको ं को जीवन जीने तथा समाज से सम्बंध स्थापित करन ं की शिक्षा वही दे पाते। और बच्चा पढ़ने–लिखने के बाद भी जीवन के मार्ग में आने बढ़ने मे असफल रहता है। हम बच्चे को यथार्थ स्थिति का ज्ञान नहीं करा पाते है। पाठ्यचर्चा ऐसी होनी चाहिए। जो जीवन जीने को सामर्थ्य दे।

पाठ्यचर्या के माध्यम से विद्यालय व समाज का सम्बन्ध स्थापित किया जाना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र दोनो ं की भौगोलिक परिस्थिति परम्परा, संस्कृति आदि का समावेश होना चाहिए। कृषि, उससे होने वाले लाभी भी शामिल किसे जाने चाहिए।

6. विषयों के पारस्पिक समबन्ध का सिद्धान्त**(Principle of Co-relation of Various subject)** :–

पाठ्चर्या में सभी विषयो ं का एक दूसरे से सम्बंध होना चाहिए और सभी विषय जवीन से जुड़े होने चाहिए चाहे विज्ञान इतिहास, भूगोली हिन्दी, गणित सभी का सम्बन्ध जीवन से होना चाहिए। एक कक्षा के अनके विषयों का भी आपस से सम्बंध हो और एक कक्षा मे अर्जित ज्ञान अगली कखा के लिए उपयोगी होना चाहिए। प्रत्येक विषय के अनुभव अलग–अलग होते है जैसे विज्ञान शरीरिक रचना, संगठन, क्रियाओं का ज्ञान कराता है। उसी प्रकार इतिहास पूर्व में होने वाली घटनाओं भूगोल पृथ्वी का क्षेत्र और

गणित अंको का ज्ञान कराता है। इस प्रकार ज्ञान क्रमबद्ध व एकसूत्र में बंधा हुआ होना चाहिए। पाठ्यचर्या ऐसी होनी चाहिए जिससे विघार्थी की प्रगति हो।

विज्ञान विषय से मनोविज्ञान विषय बहुत कुछ समानाएं रखतजा है उसी प्रकार सभी विषयो की पाठ्यचर्चा इस प्रकार बननी चाहिए जिससे सभी विषय एक दूसरे स` सम्बन्धित हो। किसी ऐसी हो कि एक विषय की शिक्षा दूसरे विषय की शिखा ऐसी हो कि एक विषय की शिक्षा द ू सरे विषय की शिक्षा का आधार बन सके। विषयों के सम्बन्धित न होने पर पाठ्यक्रम प्रभावशीलता समाप्त हो जाती है।

7. संस्कृति वं सभ्यता के ज्ञान का सिद्धान्त :–

(Principle of the knowldeg of culture of Civlization) :–

विज्ञान पाठयचर्या निर्माण के समय इस बात का भी ध्यान रखा चाहिए इसमें उन विषयो ं वस्तुओं क्रियाओं को अवश्य सम्मिलित किया जाये जिसमे ं बालको ं को अपनी संस्कृति व सभ्यता का ज्ञान प्राप्त हो सके। शिक्षा का एक उद्देश्य संस्कृति व सभ्यता का संरक्षण व विकास करना है जैसे खाना खाने से पहले हाथों का धोना इसका वैज्ञानिक कारण भी तो है और हमारी संस्कृति भी मार्थ पर टीका लगाना हमारी स ं स्कृति और विज्ञान के अनुसार मस्तिष्क में शीतलता बनी रहती है।

8. क्रियाशीलता को प्रेरित करने का सिद्धान्त (Activity centred curriculum) :–

जन्म से ही बच्चे क्रियाशील होते है। विद्यार्थियों को केवल उपदेश वव्याख्यान में उतना आनंद नहीं आता है। जितना कि किसी कार्य को करने में मजा आता है। इसलिए पाठ्यचर्या तैयार करते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि छात्रों का क्रियात्मक विकास हो। आयु के अनुसार पाठ्यचर्या में कुछ क्रियाकलापों को सम्मिलित किया जाना चाहिए। जो बालक स्वंय करता है उसमें बच्चे के हाथ बुद्धि अर्थात मस्तिष्क भी कार्यशील रहते है। **जॉन डी.वी**. ने भी करके सीखने को बढावा दिया है। बालको की आयु रूचि शक्तिओ स्थान वातारण परिस्थिति देखकर क्रियाकलाप पाठ्यक्रमक में शामिल किये जाने चाहिए जैसे प्राथमिक स्तर में खेल–कूद संम्बन्धी माध्यामिक स्तर में प्रयोजनों (Project) एवं उच्च शिक्षा में रचनात्मक व सृजनात्मक क्रियाओ ं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने क्रियाशीलता को बहुत महत्व दिया है। माध्यामिक शिक्षा आयोग के अनुसार विघार्थिया` के व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक अधिक से अधिक कार्यक्रमों का विद्यालय में आयोजन किया जाना चाहिए। भिन्न–भिन्न रूचियो ं व प्रवृत्तियों वाले विघार्थियो ं वाले विद्यार्थियों को विभिन्न प्रवृत्तियों, रूचियों तथा शक्तित को प्रेरित करने वाली क्रियाओं को ही महत्व दिया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थियो का सर्वांगीण विकास हो।

9. अनुभवों की पूर्णता का सिद्धान्त (Principle of Totalfiy of Experience) :-

हमारें यहॉ वर्तमान पाठ्यचर्या यें विषयों को स्पष्ट रूप से विभाजित किया गया है। विद्यार्थियो ं को प्रत्येक विषय का ज्ञान अलग दिया जाता है। इसलिए बच्चों को पूर्ण अनुभव प्राप्त नहीं होता। बच्चों का ज्ञान एकांगी रह जाता है। पाठ्यचर्या मं` मानव जाति के अनुभवो ं की पूर्णता निहित होती

है अर्थात् पाठ्यचर्या मे ं परम्परागत ढंग स े पढ़ाये जाने वाले सैद्धान्तिक विषयो ं के साथ–साथ उन सभी अनुभवो ं को भी स्थान दिया जाना चाहिए जिनको ं बालक विभिन्न क्रियाओ ं द्वारा प्राप्त करता है। ये क्रियाएं विद्यालय खेल क े मैदान कक्षा–कक्ष प्रयोगशाला पुस्तकालय व विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के अनौपाचरिक सम्पकों में लगातार गतिशीत रहती है। माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार पाठ्यचर्या का केवल सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है बल्कि इसमें अनुभवों की सम्पूर्णता निहित होती है। विद्यार्थियों को पूर्ण अनुभव प्राप्त करने का सबसे महत्वपूर्ण स्थान विद्यालय है।

10. रचनात्मक व सृजनात्मक शाक्तियों का उपयोग का सिद्धान्त **(Principle of Utilitising creative of Constrctive power)** :–

0पाठ्यचर्या में ऐसे अवसर प्रदान किये जाने चाहिए जिससे उनकी रचनात्मक व सृजनात्मक शाक्तियों को अधिक से अधिक उपयोग किया जा सके । इसके लिए बालकों को प्रोत्साहित भी किया जाना चाहिए। और उचित निर्देशन प्रदान करना चाहिए। बालकों में रचनात्मक प्रवृत्ति बहुत अधिक होती है इसलिए पाठ्यचर्या में रचनात्मक से सम्बंधित विषय का अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए।